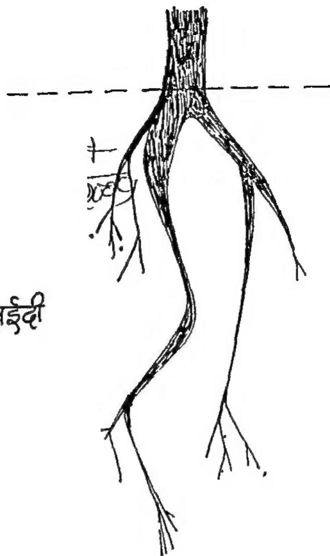
पेड़ गिरता हुआ

वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर

मख्मूर सईदी



पेड़ गिरता हुआ

मख्मूर सईदी

प्रथम संस्करण 1986

मूल्य तीस रुपये मात्र

प्रकाशक
वाग्देवी प्रकाशन
सुगन निवास चन्दन सागर
बीकानेर

मुद्रक
साखला प्रिंटर्स
सुगन निवास चन्दन सागर
बीकानेर

आवरण हरिप्रकाश त्यागी

PERH GIRTA HUA (*Urdu Poetry*)
by Makhmoor Saeedi

Rs 30-00

मख्मूर सईदी की कविता परम्परा और आधुनिकता की सन्धि रेखा की कविता मानी जाती रही है। लेकिन यह मान लेना मख्मूर की कविता को अधूरा समझना ही नहीं, परम्परा और आधुनिकता को एक दूसरे के बरक्स खडा कर देना है। परम्परा एक मूल्य दृष्टि है जबकि आधुनिकता अपनी परिस्थिति की पहचान—और ये दोनो अनिवार्यत एक दूसरे के विरोध मे नही हैं क्योकि अपनी परिस्थिति की पहचान मे अपनी परम्परा की पहचान भी निहित है। जब किसी काव्य प्रतिभा की यात्रा समकालीन परिस्थितियो के बोध का रचनात्मक साक्ष्य देते हुए उन मे भी अपनी मूल्य परम्परा का अन्वेषण करती है तो उस काव्य सवेदना का उद्घाटन होता है जो मख्मूर सईदी जैसे कवियो की सार्थकता को रेखाकित करती है।

मख्मूर को आधुनिक कवि कहने म कुछ लोगो को हिचक हो सकती है क्योकि उन की शाइरी के बिम्बों प्रतीको का आधुनिक जीवन से प्रत्यक्ष रिश्ता नही दीखता। लेकिन मख्मूर उर्दू के शाइर हैं और एक सवेदनशील और जिम्मेदार कलाकार की तरह व ह अपने माध्यम—अपनी भाषा—की सम्प्रेषण परिस्थिति का वाजिब अहसास है। उर्दू कविता का सम्प्रेषण सस्कार और परिस्थिति आज भी मुख्यत वाचिक है—यद्यपि प्रकाशन की सुविधा पहले की अपेक्षा म बढी है—और एक शाइर की हैसियत से मख्मूर इस परिस्थिति की अनदेखी नही कर सकते। अपनी सम्प्रेषण परिस्थिति की यह पहचान ही मख्मूर की कविता म उस आत्मीय टोन की पृष्ठभूमि है जिस की वजह से वह सहज सम्प्रेषणीय बन सकी और श्रोता समूहो द्वारा सराही जाती रही है।

लेकिन साथ ही मख्मूर के कवि को अपने समय के उन तनावो दबावो का भी तीखा अहसास है जिन का मुकाबला वह उस सरल आस्था से करना चाहते हैं जो वाचिक समाजा की खास ताकत है। किन्तु मख्मूर उन लेखको म नही हैं जो हर क्षण अपनी आस्था का ढोल पीटते रहते हैं। यह आस्था उन की कविता के रेशे रेशे मे फलती है—क्योकि उन की काव्य-सवेदना समय की शक्ति को पहचानने के साथ साथ कविता की शक्ति को भी पहचानती है और इसलिए समय के सम्मुख आत्मसमर्पण नही कर देती। जब कवि प्रतिपल समय से लडने की या उसे अपने अनुकूल करने की घोषणा करता दिखता है तो कही न कही वह उस से गहरे मे आतकित हो रहा

होता है। मख़मूर की कविता अपनी आस्थाओं की अलग से घोषणा नहीं करती लेकिन जब वह कहती है

लेके उस पार न जायेगी जुदा राह कोई
भीड़ के साथ ही दलदल में उतरना होगा

तो वह न केवल अपनी वृहत्तर अस्मिता और नियति को पहचानती है बल्कि राह बदलने की आवश्यकता का संकेत करती हुई भी मिरोन वाल्दा के कथन की याद दिलाती है कि कविता इतिहास की सेवा नहीं करती बल्कि उस के बोझ का सार्वभौमिक मानवीय अनुभव में रूपान्तरण करती है।

शायद इसीलिए मख़मूर की कविता में वह आत्मविश्वास है जो अपनी भाषा में 'सार्वभौमिक मानवीय अनुभव' की पहचान से उपजता है। उन की काव्य भाषा में एक विरल सहजता है जो गहरे से गहरे अनुभवों को बड़ी आत्मीयता के साथ हमारी संवेदना में उतार देती है

सर पटकते हैं बगोले वही मौजों की तरह
अब जो सहरा है किसी दिन ये समुन्दर होगा

हिन्दी कविता में पिछले कुछ अर्से से 'छन्द की वापसी', 'लिरिक की वापसी' और वाचिक परम्परा का बहुत चर्चा रहा है। मख़मूर की कविता हिन्दी पाठक को शायद उस कविता की एक झलक दे सकती है जो श्रोता समूहों में तो प्रभावशाली है ही, पर पाठक के एकान्त में भी बेअसर नहीं हो जाती।

मख़मूर भाई मेरी एक प्रिय भाषा के वरिष्ठ रचनाकार तो हैं ही मैं उन्हें बड़ा भाई मानता रहा हूँ। इसलिए यह भूमिका लिखते हुए जहाँ मन में संकोच है वहीं यह अहसास भी कि शायद यह सब से बड़ा सम्मान है जो एक वरिष्ठ रचनाकार अपने बाद के रचनाकार को दे सकता है। उन के अनवरत स्नेह की कामना करता हूँ।

—नन्दकिशोर आचार्य

अनुक्रम

गजलें

रग पेडा का क्या हुआ देखो 11
न रस्ता न कोई डगर है यहाँ 12
हर दरीचे मे सिर कत्ल का मजर होगा 13
रुख कभी अपना हवाओ को बदलना भी पडा है 14
लड पडे बेबात भी, होता रहा ऐसा बहुत 15
रातो का अधेरा ही अब दिन का उजाला है 16
बहार लौट ही आई तो क्या कि तू ही न था 17
नजरो से साहिलो के नजारे निहाँ हुए 18
जो ये शर्ते-तअल्लुक है कि है हम को जुदा रहना 19
बीते मौसम जो साथ लाती हैं 20
बसे बसाये परिन्दो के घर उजडने लगे 21
एक अहसासे ज़ियाँ, लम्हा ब लम्हा क्या है 22
मुन्तजिर उस का कोई खुद उस के घर म रह गया 23
बन सके जो दिले रुस्वा के सहारे कम हैं 24
पै ब पै सम्त सफर अपनी बदलता क्यू है 25
पेड गिरता कोई नजर आया 26
भीड मे है मगर अकेला है 27
न एक पल सर दश्त-तपाँ रुके बादल 28
दीवारो दर को गर्द का बादल निगल गया 29
सामने गम की रहगुजर आई 30
चल पडे हैं तो कही जा के ठहरना होगा 31
पार करना ह नदी को तो उतर पानी म 32

सर पर जो सायवाँ से पिघलते हैं धूप म 33
सुन सका कोई न जिस को वा सदा मेरी थी 34
अल्फाज म अहसास का ढाला नही जाता 35
गमो निशात की हर रहगुजर म तन्हा हूँ 36
जल थल सहरा सुन्न समुन्दर रखते हैं 37
समझ न रम्ज ए हाजिर का वाकआ मुझ को 38
म मसा रफ्त हुआ दिल को तरी जात क साथ 39
सख्त दरिया से भी गर पार उतर जाओगे 40

नज्मे

दायरा के कनी 43
हृदयदिया 44
सरावे म 45
जादे सफर 47
पनघट 48
आखिरी नोहा 49
अजाम की तरफ 51
नागीदा 52
तिलिस्मे आबो गिल 54
आते जाते लम्हा की सदा 56
सफर का आखरी मजर 58
एक अछूता शहरी 60
समुन्दर का नोहा सुनो ! 63
मेरा नाम 65
गुमशुदा कडिया 66
खिजाँ का मौसम 67
रास्ते रोशन 69
खाक जो बाद से आगे 71
लहू म डूबता मजर 73
अधी गुफा मे मौत 75
नवद 76
बुलावा 78
जमी का ये टुकडा 79

إهداء

रग पेडो का क्या हुआ देखो
कोई पत्ता नही हरा देखो

ढूटना अक्से-गुमशुदा मेरा
अव कभी तुम जो आईना देखो

क्या अजव बोल ही पडे पत्थर
अपना किस्सा उसे सुना देखो

दोस्ती उस की निभ नही सकती
दिल न माने तो आजमा देखो

अजनवी हो गये शनासा लाग
वक्त दिखलाये और क्या देखो

जिन्दगी को शिकस्त दी गाया
मरने वालो का हौसला देखो

ख्वुदगरज़ है ये वस्तियाँ 'मख्मूर'
तुम भी अपना बुरा-भला देखो

अक्से गुमशुदा=खोया हुआ प्रतिबिम्ब, शनासा=परिचित, शिकस्त=हार

न रस्ता न कोई डगर है यहा
मगर सब की क़िस्मत सफ़र है यहाँ

छिडी है वहम मुखर्रई की जग
लहू मे हरिक चेहरा तर है यहाँ

ज़बाँ पर जिसे कोई लाता नही
उसी लफ्ज का सब को डर है यहा

जीये जायेगे झूठी खबरो प'लोग
यही एक सच्ची खबर है यहाँ

हवाओ की उगली पकड कर चलो
वसीला यही मोतबर है यहा

न इस शहरे-वेहिस को सहरा कहा
सुनो ! इक हमारा भी घर है यहा

पलक भी झपकते हो 'मख्मूर' क्यू
तमाशा बहुत मुख्तसर है यहा

मुखर्रई=विजय वसीला=माध्यम मोतबर=विश्व
सनीय शहर वहिस=सब नाशून्य नगर मुख्तसर=सक्षिप्त

हर दरीचे मे मिरे वस्ल का मंज़र होगा
शाम होगी तो तमाशा यही घर घर होगा

पल की दहलीज़ प' गिर जाऊँगा बेसुध हो कर
बोझ सदियों की थकन का मिरे सर पर होगा

मैं भी इक जिस्म हूँ, साया तो नही हूँ तेरा
यूँ तिरे हिज्र म जीना मुझे दूभर होगा

अपनी ही आँच मे पिघला हुआ चाँदी का बदन
सरहदे-लम्स तक आते हुए पत्थर होगा

लोग इस तरह तो शक्लें न बदलते होंगे
आईना अब उसे देखेगा तो शशदर होगा

सर पटकते है बगोले वही मौजो की तरह
अब जो सहरा है किसी दिन ये समुदर होगा

दश्ते-तदबीर मे जो खाक-ब-सर है 'मख़्मूर'
हो न हो मेरा ही आवारा मुकद्दर होगा

दरीचे=खिड़की हिज्र=वियोग सरहदे-लम्स=स्पर्श का सीमा
शशदर=प्रचम्भित बगोले=धूल के बवण्डर दश्त तद्बीर=
प्रयास का जगल खाक ब-सर=हताश शोक से रोता पीटता

रुख कभी अपना हवाओं का बदलना भी पड़ा है
सरफिरा कोई परिन्दा जब हवाओं से लड़ा है

किन गुजरते मौसमों का मर्सिया मैं सुन रहा हूँ
फिर ये किसका नाम लेकर पेड़ से पत्ता झड़ा है

जब वो ज़िन्दा था तो इक छोटे से कद का आदमी था
आज चौराहे प' जिसका देवकामत बुत गड़ा है

खुशनुमा है ताज जो बख्शा गया है, मुझको लेकिन
काम मेरे आ नहीं सकता कि मेरा सर बड़ा है

पीछे मुड़-मुड़ कर निगाहें गुमशुदा मंजर को ढूंढें
दायें-बायें कुछ नहीं है, सामने पर्दा पड़ा है

सहल समझे थे गुजर जाना मसर्रत की तलब से
अहले गम ने अब ये जाना मरहला ये भी कड़ा है

मुनअकिस है जिसमें ऐ 'मख्मूर' अक्से-गुल कहीं मे
आहनी दीवार में ये आईना किसने जड़ा है

मर्सिया=मृत्यु गीत देवकामत=राक्षस का सा खुशनुमा=मनोरम गुमशुदा मंजर=खोये हुए दृश्य सहल=सरल मसर्रत=प्रसन्नता तलब=याचना मरहला=मोड़ मुनअकिस=प्रतिबिम्बित अक्से गुल=गुल की प्रतिछाया आहनी=लोह की

लड पडे बेबात भी, होता रहा ऐसा बहुत
हम भी कम सरकश न थे, खुदसर जो थी दुनिया बहुत

अपने मिट्टी के बदन मे हूँ अभी सिमटा हुआ
जर्रा-जर्रा हो के मैं बिखरा तो फैलूगा बहुत

कोई मेहमाँ आ रहा है ताजा हगामे लिये
बदला बदला है पुराने शहर का नक्शा बहुत

तेरी परछाई नजर आ आ के खो जाती रही
जिन्दगी की भीड मे हम ने तुझे ढूढा बहुत

इस तरफ से जाने कितने काफिले आये गये
अब सफर मुश्किल नही, हमवार है रस्ता बहुत

तू कोई साया है या ठडी हवा, दुनिया ने क्यू
चिलचिलाती धूप मे रस्ता तिरा देखा बहुत

देख लो 'मन्सूर' इन मे अपना परतौ भी कही
अक्स हैं चेहरो के आईना-दर-आईना बहुत

सरकश=विद्रोही खुदसर=मनमानी करने वाली जर्रा जर्रा=कण कण
परतौ=प्रतिछाया अक्स=बिम्ब आईना दर-आईना=दर्पण दर्पण

रातो का अधेरा ही अब दिन का उजाला है
ऐ शहरे-हवस तेरा सूरज भी तो काला है

किस्मत की लकीरे इस कोशिश मे हुई जख्मी
गिरते हुए इक घर को हाथो प' सभाला है

सूरज की बुलन्दी से कुछ सगे-सदा फेको
यू रात का सन्नाटा कब टूटने वाला है

मिट-मिट के उभर आये, कुछ और निखर जाये
तस्वीरे-तमन्ना का हर रग निराला है

अश्को के दिये सूने ताको प' हमी रख दे
वीरान बहुत दिन से यादो का शिवाला है

खुद अपना लहू पीना, मरने के लिए जीना
ऐ हमनफसो तुम ने क्या रोग ये पाला है

'मख्मूर' ये सूरत किस मदिर से निकल आई
चाँदी का बदन, सर पर सोने का दुशाला है

शहरे हवस=वासना का नगर सगे सदा=आवाज का पत्थर तस्वीरे तमन्ना=इच्छा का चित्र ताको=दीवार मे बना हुआ छोटा मेहराबदार खोल हमनफसो=मित्रो

बहार लौट ही आई तो क्या कि तू ही न था
नजर को ज़ौके-तमाशा-ए-रंगो-बू ही न था

अबस किसी से थी हुस्ने-कबूल की उम्मीद
हमे सलीक-ए-इज्हारे-आरज़ू ही न था

फिर उस सफर का तो लाहासिली ही हासिल थी
कदम किसी का सरे-राहे-जुस्तजू ही न था

अब उस नजर ने भी आखिर यही गवाही दी
कि चाक दामने-दिल काबिले-रफू ही न था

कुछ और लोग भी थे जो हमे अजीज़ रहे
सबब हमारी उदासी का एक तू ही न था

सबब कुछ उस के तगाफुल का पूछते उस से
रहा ये रंज कि वो शख्स रूबरू ही न था

जला दरख्त थी अपनी भी जिन्दगी 'मख्मूर'
रगों मे जिस की कोई जज्ब-ए-नमू ही न था

ज़ौके तमाशा ए रंगो बू=रंग और गंध को देखने की रुचि अबस=व्यर्थ हुस्ने कबूल=श्रद्धा से स्वीकृति सलीक ए इज्हारे आरजू=आकांक्षा की अभिव्यक्ति का सुघड़पन लाहासिली=अप्राप्य हासिल=प्राप्य सरे राहे जुस्तजू=खोज की राह पर दामने दिल=दिल के दामन का फटा हुआ भाग काबिले रफू=रफू के योग्य अज़ीज़=प्रिय तगाफुल=उपेक्षा जज्ब ए नमू=विकसित होने की भावना

नज़रों से साहिलों के नज़ारे निहाँ हुए
गहरे समुन्दरों में सफ़ीने रवाँ हुए

गुज़री तमाम उम्र खुद अपनी तलाश में
हम खुद ही अपनी राह के संगे-गिराँ हुए

था हम से तेज़गाम बहुत कारवाने-वक़्त
हम रफ़्ता-रफ़्ता गर्दे-पसे-कारवाँ हुए

ताबीर की तलाश में खुद खो गये हैं हम
देखे थे जितने ख्वाब सभी रायगाँ हुए

आईन-ए-नज़र में था किन मंज़िलों का अक्स !
हम को गुबारे-राह प' क्या-क्या गुमाँ हुए

'मख़्मूर' मेरी ख़ानाख़राबी गवाह है
वो मेरे घर में आये, मिरे मेहमाँ हुए

साहिलों=किनारा निहाँ=छुप जाना सफ़ीने=नावें रवाँ=रवाना संगे गिराँ=भारी पत्थर तेज़गाम=शीघ्रगामी कारवाने वक़्त=समय का कारवां रफ़्ता रफ़्ता=धीरे धीरे गर्दे पसे कारवाँ=कारवां के पीछे की धूल ताबीर=फल रायगाँ=व्यर्थ आईन ए नज़र=दृष्टि का दर्पण अक्स=प्रतिबिम्ब गुबारे राह=राह की धूल ख़ानाख़राबी=घर की ख़राबी

जो ये शर्ते–तअल्लुक है, कि है हम को जुदा रहना
तो ख्वाबो मे भी क्यू आओ, खयालो मे भी क्या रहना

पुराने ख्वाब पलको से झटक दो, सोचते क्या हो
मुकद्दर खुश्क पत्तो का है शाखो से जुदा रहना

शजर जख्मी उमीदो के अभी तक लहलहाते हैं
इन्हे पतझड के मौसम मे भी आता है हरा रहना

कभी गुजरेगा इन गलियो से इक सैले-बला यारो
ये मिट्टी के मका ढह जायगे सब, इन मे क्या रहना

गुजरते रोजो-शब के दर्मियाँ ये बेहिसी मेरी
किसी पत्थर का जैसे बीच रस्ते मे पडे रहना

लहू रोती हुई आँखो मे हसरत तुझ को पाने की
सुलगते पानियो मे इक लरजते अक्स का रहना

अजब क्या है अगर 'मख्मूर' तुम पर यूरिशे–गम है
हवाओ की तो आदत है चिरागो से खफा रहना

शर्ते तअल्लुक=सम्बन्ध की शर्त्ते खुश्क=शुष्क शजर=पेड
सैले बला=विपत्ति की बाढ रोजो शब=दिन रात बेहिसी=
संवेदन शून्यता अक्स=प्रतिबिम्ब यूरिशे गम=दुखो का हमला

बीते मौसम जो साथ लाती है
वो हवायें किधर से आती हैं

घर में क्या मीर के लिये निकला
गनके अब तो दिल दुखाती है

दूर तक तुझ से हो गये तो खुला
कुर्बतें फासला बढ़ाती हैं

दिन निकलता नज़र नहीं आता
और रात गुज़रती जाती है

रोशनी में भटकने वालों को
जुल्मतें रास्ता दिखाती हैं

जो भुला दी सभी ने ऐ 'मख़मूर'
मुझ को बात वो याद आती है

कुर्बतें=सामीप्य का बहुवचन   जुल्मतें=अंधेरे

20 पड गिरना हुआ

बसे बसाये परिन्दों के घर उजडने लगे
कि आँधियो मे जडो से दरख्त उखडने लगे

सुलगते दश्त मे चश्मा कही नही फूटा
और ऐसी प्यास कि सब ऐडियाँ रगडने लगे

अना के हाथ मे तलवार किस ने दे दी थी
कि लोग अपनी ही परछाइयो मे लडने लगे

लहू का सैल वो फिर बस्तियो की सम्त बढा
वो जगलो मे दरिन्दे यही झगडने लगे

जो मजिलें ह तिरी, सर तुझी को करनी है
गिला न कर, कि तिरे हम सफर बिछडने लगे

तिरी तलब की ये रातें, ये ख्वाब कैसे है
कि रोज नीद मे हम तितलिया पकडने लगे

घडी जवाल की आई तो दफअतन् 'मख्मूर'
बने बनाये सभी सिलसिले बिगडने लगे

दश्त=जगल अना=अह सैल=बाढ सम्त=ओर
तलब=आकांक्षा जवाल=पतन दफअतन्=अचानक

एक अहसासे-जियाँ, लम्हा-ब-लम्हा क्या है
सोचता हूँ मिरे इमरोज का फर्दा क्या है

कोई मजर है न आवाज, तमाशा क्या है
किस ने डाले हैं ये पर्दे ? पसे-पर्दा क्या है

कभी रोशन, कभी तारीक, फजा इस घर की
ताके-दिल में कभी जलता, कभी बुझता क्या है

हर कदम, पाँव के नीचे से निकलती-सी जमी
दम-ब-दम, हाथ से जाती सी ये दुनिया क्या है

अक्स इस आईने मे कोई निखरता ही नही
दर्मियाने-दिलो-दुनिया ये धुआँ-सा क्या है

मैं, कि हर चेहरे मे खुद अपना ही चेहरा देखूँ
अजनबी भीड से यारो मिरा रिश्ता क्या है

ये हवायें तिरे हाथ आ न सकेगी 'मख्मूर'
तू सदा बन के तआकुब मे लपकता क्या है

अहसासे जियाँ=हानि की अनुभूति लम्हा ब लम्हा=क्षण प्रति क्षण इमरोज=आज वर्तमान फर्दा=भविष्य मजर=दृश्य पसे पर्दा=पर्दे के पीछे तारीक=अधेरी ताक दिल=दिल के मोखल दम ब दम=पल पल साँस साँस अक्स=प्रतिबिम्ब दर्मियाने दिलो दुनिया=आन्तरिक और बाह्य के बीच तआक्कुब=पीछा करना

मुंतजिर उस का कोई खुद उस के घर मे रह गया
वो मुसाफिर था किसी लम्बे सफर मे रह गया

आस्मा-पैमा इरादा, बालो-पर मे रह गया
हर परिन्दा कुछ जमीनो के असर मे रह गया

यू तो जो पाया सफर मे, सब सफर मे रह गया
रास्ते का आखिरी मजर नजर मे रह गया

जा बसा जोडा परिन्दो का तो अब जाने कहा
घोसला उलझा हुआ शाखे-शजर मे रह गया

तू नही लेकिन तिरा परतौ इस उजडे दिल मे है
जलता बुझता इक दिया सूने खण्डर मे रह गया

रग सब उस की नजर के, आसुओ मे बह गये
लेकिन इक खुशबू का चेहरा चश्मे-तर मे रह गया

मजिला के ख्वाब ऐ 'मखमूर' अधूरे ही रहे
काफिला खो कर तिलिस्मे-रहगुजर मे रह गया

मुतजिर=प्रतीक्षित आस्मा पैमा इरादा=आकाश नापने का इरादा
बालो पर=पंख और उनके नीचे के बाल शाख शजर=पेड की टहनी
परतौ=प्रतिबिम्ब चश्म तर=भीगी आँख तिलिस्मे रहगुजर=राह का रहस्य

बन सकें जो दिले-रुस्वा के सहारे कम हैं
है शनासा तो बहुत दोस्त हमारे कम हैं

जिन्दगी जैसे गुजार आये हो, आलम ये हैं
यूं तो दिन हम ने तिरे साथ गुजारे कम हैं

थे सफीने तो बहुत पार उतरने वाले
नाखुदाओं ने मगर पार उतारे कम हैं

है गजब शोखी-ए-तस्वीरे तमन्ना हरचंद
हम ने दानिस्ता कई रंग उभारे कम हैं

बहुत आवाज प' आवाज तो देने वाले
दिल मगर खुद ही जिन्हें बढ के पुकारे कम हैं

खेल समझा न तिरे प्यार का हम ने वरना
हम कोई खेल जो खेले हैं तो हारे कम हैं

मौत का कोई बहाना नहीं मिलता 'मख्मूर'
और जीना हो तो जीने के सहारे कम हैं

दिले रुस्वा=बदनाम दिल शनासा=परिचित सफीने=नावें
नाखुदाओं=नाविकों शोखी ए तस्वीरे तमन्ना=इच्छा रूपी
चित्र की चंचलता हरचंद=यद्यपि दानिस्ता=जान बूझकर

पे-ब-पे सम्ते-सफ़र अपनी बदलता क्यूँ है
चलते रहना है तो रुक-रुक के सभलता क्यूँ है

तेरे माज़ी की हर उलझन, तिरा अपना साया
अपने ही साये से कतरा के निकलता क्यूं है

जब सरे-आबे-रवां, नक्श किसी का ठहरा
मौज दर मौज य इक अक्स मचलता क्यू हे

तितलियाँ है ये मुलाकात की रंगी घडिया
रंग उड जायेगा, पर इन के कुचलता क्यूँ है

नम हवाओ मे है किस गम बदन की खुशबू
मंद झोको मे ये शोला सा निकलता क्यूँ है

आगे इस मोड के, रस्ता हो न जाने कैसा
दफ़अतन् आ के यही पाव फिसलता क्यूँ है

बच सका कुछ भी न जब कहरे-हवा से 'मख्मूर'
इक दिया आस की चौखट प' ये जलता क्यूँ है

पे ब पे=निरंतर सम्ते-सफ़र=यात्रा की दिशा माज़ी=अतीत
सरे आबे रवाँ=बहते हुए पानी पर नक्श=निशान मौज दर मौज=लहर पर लहर नम=आर्द्र दफ़अतन्=अचानक कहरे-हवा=हवा की विपदा

पेड गिरता कोई नज़र आया
दिल घने जगलो का भर आया

महफिलो महफिलो प' खामोशी
किस का अफसाना खत्म पर आया

रास्ते मे रुकावट थी बहुत
मैं हवा की तरह गुजर आया

रात उतरने लगी है गलियो म
दिन का दुख इख्तिताम पर आया

इक परिन्दा, हवा का हमपरवाज
मेरे आगन मे क्यू उतर आया

गमे-जाना की आहटे उभरी
दिले-तन्हा का हम सफर आया

आज उस से बिछड के ऐ 'भरभूर'
दिल बहुत गमजदा नजर आया

इख्तिताम=समाप्त हमपरवाज=साथ उडान भरने वाला गमे जानां=प्रियतम का दुख दिले तन्हा=अकेला दिल गमज़दा=दुख से भरा

भीड मे है मगर अकेला है
उस का कद दूसरो से ऊंचा है

अपने अपने दुखो की दुनिया मे
मैं भी तन्हा हूँ वो भी तन्हा है

मंजिलें गम की तै' नही होती
रास्ता साथ साथ चलता है

साथ ले लो सिपर मुहब्बत की
उस की नफरत का वार सहना है

तुम से टूटा जो इक तअल्लुक था
अब तो सारे जहाँ से रिश्ता है

खुद से मिल कर बहुत उदास था आज
वो जो हँस हँस के सब से मिलता है

उस की यादें भी साथ छोड गई
इन दिनो दिल बहुत अकेला है

तन्हा=अकेला सिपर=ढाल

न एक पल सरे-दश्ते-तपाँ रुके बादल
हवा के दोश प' उड़ते चले गये बादल

सुलगती शाम के दर पर उदासियों का नज़ूल
धुवाँ-धुवाँ सी फ़िज़ायें भुके-भुके बादल

सिमट के ख़ुद मे कहीं दूर जा छिपा सूरज
उफ़क़ से ता-ब-उफ़क़ फैलने लगे बादल

ये आस्माँ कोई सादा सलेट है जिस पर
बना के नित नई शक्लें मिटायेंगे बादल

उधर थी धूप जिधर बस्तियाँ थीं फूलों की
उजाड़ सम्तों प' साया किये रहे बादल

बिखर के रह गये मौजे-ग़ुबार की मानिंद
उलझ पड़े थे हवाओं से सरफिरे बादल

ज़मीं की प्यास बुझाने उठे मगर 'मख़्मूर'
समुन्दरों ही प' जा कर बरस पड़े बादल

सर दश्ते तपाँ=जलता हुआ जंगल दोश=कंधा दर=दरवाज़ा नज़ूल=उतरना
ता ब उफ़क़=क्षितिज से क्षितिज तक सम्तों=दिशाओं मौजे ग़ुबार=धूल की लहर

दीवारो-दर को गर्द का बादल निगल गया
आंधी चली तो शहर का मंजर बदल गया

आया था किस तरफ से वो अंबोहे-आरजू
क्यू दिल को रौंदता हुआ आगे निकल गया

हद्दे-निगाह तक कहीं अब रोशनी नहीं
सर से तिरे खयाल का सूरज भी ढल गया

पाया उसे तो अपने खतो-खाल खो गये
कुर्बत का आईना मिरा चेहरा निगल गया

थी रोशनी की नर्म खिरामी भी हश्र-खेज
आये वो जलजले कि अंधेरा दहल गया

था सद्दे-राहे-शौक जो मंजिल के नाम पर
ठोकर मिरी लगी तो वो पत्थर पिघल गया

'मख्मूर' उसी की याद का परतौ है, हो न हो
दिल में ये इक दिया जो सरे-शाम जल गया

दीवारो दर=दीवार और दरवाजा गर्द=धूल अंबोह आरजू=आकांक्षाओं की भीड़ हद्द निगाह=दृष्टि की सीमा खतो खाल=तिल और चमड़ी-नन नक्श कुर्बत=सामीप्य खिरामी=धीमे चलना हश्र खेज=प्रलयकारी सद्दे राहे शौक=प्रेम मार्ग का अवरोध परतौ=प्रतिच्छाया

सामने गम की रहगुजर आई
दूर तक रोशनी नजर आई

परवतो पर रुके रहे बादल
वादियो मे नदी उतर आई

दूरियो की कसक बढ़ाने को
साअते-कुर्ब मुख्तसर आई

दिन मुझे कत्ल कर के लौट गया
शाम मेरे लहू मे तर आई

मुझ को कब शौके-शहरगर्दी था
खुद गली चल के मेरे घर आई

आज क्यूँ आईने मे शक्ल अपनी
अजनबी अजनबी नजर आई ?

हम कि 'मख्मूर' सुब्ह तक जागे
एक आहट कि रात भर आई

साअते कुर्ब=सामीप्य का क्षण मुख्तसर=संक्षिप्त शौके शहरगर्दी=नगर मे घूमने का शौक

[illegible] होगा
[illegible] होगा

[illegible] हम ने
[illegible] होगा

[illegible] रोएँगी
[illegible] होगा

[illegible] बोटें
[illegible] होगा

[illegible] -चाँ का
[illegible] होगा

[illegible] भी है
[illegible] होगा

[illegible]
[illegible] होगा

[illegible]

पार करना है नदी को तो उतर पानी मे
बनती जायेगी खुद इक राहगुजर पानी मे

जौके-तामीर था हम खानाखराबो का अजब
चाहते थे कि बने रेत का घर पानी मे

सैले-गम आँखो से सब कुछ न बहा ले जाये
डूब जाये न ये ख्वाबो का नगर पानी मे

कश्तिया डूबने वालो के तजस्सुस मे न जाय
रह गया कौन, खुदा जाने किधर पानी मे

अब जहा पाँव पडेगा यही दलदल होगी
जुस्तजू खुश्क जमीनो की न कर पानी मे

मौज दर मौज, यही शोर है तुगयानी का
साहिलो की किसे मिलती है खबर पानी मे

खुद भी बिखरा था, बिखरती हुई हर लहर के साथ
अक्स अपना उसे आता था नज़र पानी मे

राहगुजर=रास्ता जौक तामीर=निर्माण की रुचि खानाखराबा=बेघरबा
सैले गम=दुख की बाढ तजस्सुस=खोज जुस्तजू=तलाश खुश्क=शुष्क भो
दर मौज=लहर पर लहर तुगयानी=तूफान साहिलो=किनारो अक्स=बि

सर पर जो सायवाँ थे पिघलते है धूप मे
सब दम-ब-खुद खडे हुए जलते है धूप मे

पहचानना किसी का किसी को, कठिन हुआ
चेहरे हजार रग बदलते है धूप मे

बादल जो हमसफर थे कहा खो गये कि हम
तन्हा सुलगती रेत प' जलते है धूप मे

सूरज का कहर टूट पडा है जमीन पर
मजर जो आस पास थे जलते हैं धूप मे

पत्ते हिले तो शाखो से चिगारियाँ उडे
सर सब्ज पेड आग उगलते हैं धूप मे

'मख्मूर' हम को साय-ए-अब्रे-रवा मे क्या
सूरजमुखी के फूल है, पलते हैं धूप मे

सायवाँ=छाया करने वाले दम ब खुद=मौन क़हर=प्रकोप
सब्ज=हरे भरे साय ए अब्रे रवाँ=गतिशील बादल की छाया

सुन सका कोई न जिस को, वो सदा मेरी थी
मुज़य्यन जिस से मैं रहता था नवा मेरी थी

आख़िरे-शब के ठिठरते हुए सन्नाटा से
नग्मा बन कर जो उभरती थी, दुआ मेरी थी

खिलखिलाती हुई सुब्हा का समाँ था उन का
ख़ून रोती हुई शामों की फ़ज़ा मेरी थी

मुद्दआ मेरा, इन अल्फ़ाज़ के दफ़्तर में न ढूंढ
वही एक बात, जो मैं कह न सका मेरी थी

मुसिफ़े-शह्र के दरबार में क्यूं चलते हो
साहिबो मान गया मैं कि ख़ता मेरी थी

मुझ से बचकर वही चुपचाप सिधारा 'मख़्मूर'
हर तरफ़ जिस के तआक़ुब में सदा मेरी थी

मुज़य्यन=सज्जित नवा=आवाज़ आख़िरे शब=रात का अंतिम भाग
मुद्दआ=मतव्य मुसिफ़ शह्र=नगर के न्यायाधीश तआक़ुब=पीछा करना

अल्फाज मे अहसास को ढाला नही जाता
मैं चुप हूँ, मगर सर से ये सौदा नही जाता

क्या मज़रे-पुरहौल मिरे चारो तरफ है
आख तो खुली रखता हूँ देखा नही जाता

है कब से उसी शहर की जानिब सफर अपना
जिस शहर की जानिब कोई रस्ता नही जाता

चलती हैं जिलौ मे कई बेकार उम्मीदे
दिल उस की तरफ जाये तो तन्हा नही जाता

मेरी ही तरह कैद है, खुद अपनी फज़ा मे
उस तक मिरी आवाज़ का झोका नही जाता

इक धुंध भरे मोड प' हम मिल तो गये है
खो जायेंगे फिर, दिल से ये धडका नही जाता

'मख्मूर' न महमिल न कही लैली-ए-महमिल
"मजनू कोई अब जानिबे-सहरा नही जाता"

अल्फाज़=शब्द अहसास=संवेदना सौदा=उन्माद मंजरे पुरहौल=डरावना दृश्य
जानिब=ओर जिलौ=सानिध्य महमिल=ऊँट पर स्त्रियों के बैठने का कजावा
लैली ए महमिल=लैला का कजावा जानिबे सहरा=सहरा रेगिस्तान की ओर

गमो-निशात की हर रहगुजर मे तन्हा हूँ
मुझे खबर है, मैं अपने सफर मे तन्हा हूँ

मुझी प' संगे-मलामत की बारिशे होगी
कि इस दयार मे शोरीदासर मैं तन्हा हूँ

तिरे खयाल के जुगनू भी साथ छोड गये
उदास रात के सूने खडर मे तन्हा हूँ

गिराँ नही है किसी पर ये रात मेरे सिवा
कि मुब्तला मै उम्मीदे-सहर मे तन्हा हूँ

वो बेनियाज, कि देखो हो जैसे इक दुनिया
मुझे ये नाज, मैं उस की नजर मे तन्हा हूँ

मुझी से क्यू है खफा मेरा आईना 'मख्मूर'
इस अंधे शहर मे क्या खुदनगर मै तन्हा हूँ

गमो निशात=आनन्द और दुख संगे मलामत=भर्त्सना के पत्थर दयार=दुनिया शोरीदासर=दीवाना विकृत मस्तिष्क वाला गिराँ=बोझ मुब्तला=फसा हुआ उम्मीदे सहर=सुबह की आशा खुदनगर=आत्मविस्मृत

5 पड गिरता हुआ

जल थल सहरा खुश्क समुन्दर रखते हैं
आँखों में हम क्या-क्या मंजर रखते हैं

खाना बर्बादों में हमारा नाम भी लिख
शहर में तेरे हम भी इक घर रखते हैं

उजले खुश पोशाक बदन इस बस्ती के
मैली रूहें अपने अंदर रखते हैं

रस्ते सब चल पड़े किधर वो क्या जानें
पाँव ही सब जो घर के बाहर रखते हैं

तपते झोंके आ कर उठे बागों में
फूलों के सीनों पर खंजर रखते हैं

सब से झुक कर मिलना अपनी आदत है
कद अपना हम सब के बराबर रखते हैं

सहरा-सहरा सरगरदाँ है ऐ 'मख़मूर'
हम भी बगूला जैसा मुकद्दर रखते हैं

खाना बर्बादाँ=बेघरबार लोगों उजले खुश पोशाक=धवल वस्त्र रूहें=आत्माएँ सहरा-सहरा=रेगिस्तान रेगिस्तान सरगरदाँ=घूमते रहने वाला

समझ न लम्ह-ए-हाज़िर का वाक़आ मुझ को
गये दिनो का मैं क़िस्सा हूँ भूल जा मुझ को

वो कौन शख़्स था बुत्र्छ दम-ब-ख़ुद-सा, हैरां-सा
जो आईने मे खड़ा देखता रहा मुझ को

पुकारते थे कई नक़्शे-ना तराशीदा
सक़्ते-सग से आती थी इक सदा मुझ को

हुआ न सिल्सिल-ए-दद मुतशिर मुझ से
कि साथ अपने बिखरने का खौफ था मुझ को

समझ सके जो न मेरी खमोशियो की ज़बाँ
मैं सोचता हूँ कि ऐसो ने क्या सुना मुझ को

मैं आप अपनी खमोशी की गूँज मे गुम था
मुझे खयाल नही, किस ने क्या कहा मुझ को

मैं अपना मद्दे-मुक़ाबिल था आप ही 'मख़मूर'
क़दम क़दम प' हुआ मेरा सामना मुझ को

लम्ह ए हाज़िर=वर्तमान वाक़्आ=घटना दम ब ख़ुद सा=मौन नक़्शे ना तराशीदा=बिना तराशी हुई आकृति सक़्ते सग=पत्थर का मौन सिल्सिल ए दद=दद का सिल्सिला मुतशिर=छिन भिन्न मद्द मुक़ाबिल=सामने डटने वाला

ये कैसा रब्त हुआ दिल को तेरी जात के साथ
तिरा खयाल अब आता है बात बात के साथ

कठिन था मरहल-ए-इन्तिज़ारे-सुब्ह बहुत
बसर हुआ हूँ मैं खुद भी गुज़रती रात के साथ

पडी थी पा-ए-नजर मे हजार जजीरें
बधा हुआ था मैं अपने तवहुम्मात के साथ

जुलूसे-वक्त के पीछे रवाँ मैं इक लम्हा
कि जैसे कोई जनाज़ा किसी बरात के साथ

कभी-कभी तो ये होता है जैसे ये दुनिया
बदल रही हो मिरे दिल की वारदात के साथ

जो दूर से भी किसी गम का सामना हो जाय
पुकारता है मुझे कितने इल्तिफात के साथ

तडख के टूट गया दिल का आईना 'मख्मूर'
पडा जो अक्से-फना परतवे-हयात के साथ

रब्त=सम्बन्ध जात=व्यक्तित्व मरहल ए इन्तिज़ारे सुब्ह=प्रात काल की प्रतीक्षा का समय पा ए नजर=दृष्टि के परों में तवहुम्मात=सशयो जुलूसे वक्त=समय के जुलूस रवाँ=चलनेवाला इल्तिफात=कृपा अक्से फना=मौत का प्रतिबिम्ब परतवे हयात=जीवन के बिम्ब

चढ़ते दरिया से भी गर पार उतर जाओगे
पाँव रखते ही किनारे प, बिखर जाओगे

वक्त हर मोड़ प' दीवार खड़ी कर देगा
वक्त की कैद से घबरा के जिधर जाओगे

खानाबर्बाद समझ कर हमे ढलती हुई रात
तंज से पूछती है कौन से घर जाओगे

सच कहो शाम की आवारा हवा के झोंको
उम की खुशबू के तआकुब मे किधर जाओगे

नक्शे-इमरोज से आगे न निगाहें दौड़ाओ
कल की तस्वीर जो देखोगे तो डर जाओगे

मैं भी साया हूँ सियह रात मे खो जाऊँगा
तुम भी इक ख्वाब हो पल भर मे बिखर जाओगे

रास्ते शहर के सब बन्द हुए है तुम पर
घर से निकलोगे तो 'मख्मूर' किधर जाओगे

खानाबर्बाद=जिसके घर न हो तंज=व्यंग्य तआक्कुब=पीछा करने नक्शे इमरोज़=वर्तमान के चिह्न

[illegible]



दायरो के कैदी

नये नये दायरे बनाते रहे हम तुम
कि मुद्दतो से
ये दायरो का तिलस्म तश्कीले-कायनाते-बशर की
पहचान बन चुका है
हमारा ईमान बन चुका है
ये दायरे जिन्दगी को तकसीम करके अब आदमी को
तक्सीम कर रहे है
मैं अपना दायरा बनाये हुए इसी मे घिरा खडा हूँ
तुम अपना इक दायरा बनाये हुए इसी मे घिरे खडे हो
और इन जुदागाना दायरो मे भी और कितने दायरे है
इन्ही तिलिस्माती दायरो मे बटी हुई है हमारी हस्ती
निगह इस दायरे मे महबूस है दिल उस दायरे का कैदी
अजीब जाँकाह पेच-दर-पेच सिल्सिला है
न मुझ मे हिम्मत रही है, इतनी न तुम मे ये हौसला रहा है
कि इस मुदव्वर तिलिस्म से दो घडी को बाहर निकल के देखें
खुली फिजा मे, हवा के झोको के साथ कुछ दूर चल के देखें
जमीन कितनी वसीअ, कितनी बडी है अब तक

तिलस्म=जादू तश्कीले कायनाते बशर=मानव सृष्टि की रचना तक्सीम=बाँटना जुदागाना=अलग अलग हस्ती=जीवन महबूस=बन्दी जाँकाह=हृदयद्रावी पेच दर पेच=जटिल मुदव्वर=वृत्ताकार वसीअ=विस्तृत

हदबदियो

तुम्हारी मेरी नजर की हदबदियो से बाहर
उफक की मिटती हुई लकीरो के आगे आगे
ये दिलकुशा, दिलफरोज वुसअत
यहा मुझे भला या तुम्हे भला उसकी क्या जरूरत
अलग-अलग तगो-तार से दायरे बनाये हिसार खीचे
कभी-कभी खुद हमारे अन्दर से एक आवारा लहर उठती है
और हम से ये पूछती है
ये दायरो का तिलिस्म क्या है ?
नजर का धोका है वाहिमा है
मगर न मुझ मे रही है हिम्मत, न तुम मे ये हौसला रहा है
कि इस मुदव्वर तिलिस्म से दो घडी को बाहर निकल के देखें
खुली फिजा मे, हवा के झोको के साथ
कुछ दूर चल के देखें

हदबदियों=सीमा निश्चित करने का निशान उफक=क्षितिज दिलकुशा=रमणीय दिलफ़रोज=दिल को प्रकाशमान करने वाला वुसअत=विस्तार तगो तार=संकीर्ण और अंधकारमय हिसार=परकोटा वाहिमा=भ्रम

खराबे मे

शहर मे दूर, बयाबान की त हाई मे
सहरपरवर, ये पुरअसरार पुराना मदर
अपने सीने मे छुपाये हुए सदियो का सुकूत
चादनी रात मे इस तरह से एस्तादा है
पैकरे-ख्वाबे गिराँ हो जैसे

देवताओ का ये उजडा हुआ मसकन, जिसके
ताको-मेहराबो-दरो-बाम शिकस्ता हो कर
इतिक्रा-ए-बशरीय्यत का पता देते है
नुकरई धु ध मे लिपटा हुआ यूँ लगता है
कोई गुमगश्ता जहा हो जैसे

ताको-मेहराबो-दरो-बाम के सूनेपन को
सनसनाती है हवायें, तो बढा देती है
कोई पायल, कोई घुघरू, कोई झकार नही
फिर भी ख्वाबीदा फजाओ का सकूते-सीमी
गु ग माजी की जबा हो जैसे

बयाबान=अरण्य सहरपरवर=जादू जगाने वाला पुरअसरार=रहस्य से भरा सुकूत=शान्ति एस्तादा=खडे पकरे ख्वाबे गिरां=भारी स्वप्नाकृति मसकन=घर ताको मेहराबो दरो बाम=ताक मेहराब दरवाजा और छत शिकस्ता=भग्न इतिक्रा ए बशरीय्यत=मानवता के विनाश नुकरई=रजत गुमगश्ता=खोया हुआ ख्वाबीदा=स्वप्निल सकूते सीमा=रजत शांति गुग=गूगा माजी=प्रतीत

हम, कि आगोश मे ख्वाबीदा फजाओ की यहा
धडकने दिल की जगाने को चले आये है
हम, कि दोनो मे न दासी, न पुजारी कोई
इस प' यूँ हैरतो-हसरत से नजर करते है
रूहे-फर्दा निगराँ हो जैसे

हम से कुछ दूर, जरा दूर, वो हँसता हुआ चाँद
जान कर मजिले-फर्दा का मुसाफिर, शायद
खैरमकदम का हसी रग निगाहो मे भरे
टकटकी बाध के यूँ देख रहा है हम को
अपनी मजिल का निशाँ हो जैसे

रसम=मदय अक़ीदत=श्रद्धा सनमआबाद=मूर्तियो की बस्ती पर्दा दरी=फाश करना पर्दए खामोशी=चुप्पी का पर्दा शोरे फरियादो फुगाँ=आर्तनाद और परिवाद का शोर आगोश=अंक ख्वाबीदा=स्वप्निल हैरतो हसरत=आश्चर्य और निराशा रूहे फर्दा=भविष्य की आत्मा निगराँ=देखभाल करने वाला मजिले फर्दा=भविष्य का गतव्य खैरमकदम=स्वागत

जादे-सफर

अजनबी चेहरो के फैले हुए इस जगल मे
दौडते भागते लम्हो के दरीचे से कभी
इत्तिफाकन् तिरी मानूस शबाहत की झलक
पर्द ए-चश्मे-तखय्युल प'उभर कर ऐ दोस्त
डूब जाती है उसी पल, उसी साअत, जैसे
तेजरौ रेल की खिडकी से, जरा दूरी पर
किसी सेहरा की झुलसती हुई वीरानी मे
नागहा मजरे-रगी कोई दम भर के लिये
इक मुसाफिर को नजर आये और ओझल हो जाये

जादे सफर=यात्रा की राह मानूस=परिचित शबाहत=समानता पर्द ए चश्मे तखय्युल=कल्पना की आँख का पर्दा साअत=पल तेजरौ=द्रुत-गामी नागहाँ=अचानक मजरे रगी=रगीन दृश्य

पनघट

गाँवो की फजाओ मे, डोलती हवाओ मे
नग्मगी मचलती है, मस्तिया सनकती है
इक शरीर आहट पर, पुरसुकून पनघट पर
गागरे छलकती है, चूडिया छनकती हैं
सिल्सिले रुकावत के दूर तक पहुंचते है
जगख़ुर्दा तलवारे देर तक खनकती हैं

फज़ाओं=वातावरण का बहुवचन   नग्मगी=संगीतमयी आवाज़   पुरसुकून=शान्तिपूर्ण
रुकावत=प्रतिबन्धिता   जंगखुर्दा=जंग खाई हुई

आखिरी नोहा

मुझे यहाँ भेजने से पहले
ये मुझ से वादा किया था उस ने
कि वो मिरा ग़मगुसार होगा
जो दुख मुझे झेलना पड़ेगा वो उस प' सब आशकार होगा
मिरी निगाहों से दूर हो कर वो दिल से नज़दीकतर रहेगा
अकेलेपन की उदासियों के अज़ाब से बाख़बर रहेगा
जहाँ सभी साथ छोड़ जायेंगे, आसरा उस की ज़ात देगी
फ़ना की तारीक वादियों ने मुझे शऊरे-हयात देगी

ये मुझ से वादा किया था उस ने
मगर मैं तन्हा भटक रहा हूँ
फ़ना की तारीक वादियों मे मिरा कोई हमसफ़र नहीं है

आख़िरी नोहा=विलाप ग़मगुसार=मित्र आशकार=प्रकट अज़ाब=कष्ट ज़ात=व्यक्तित्व फ़ना=मृत्यु तारीक=अंधेरी शऊरे हयात=जीवन का विवेक तन्हा=अकेला हमसफ़र=सहयात्री

किसी को मेरी उदासियो की, मिरे दुखो की खबर नही है
कोई नही है जो अब मुझे रास्ता दिखाये
जो दो कदम ही सही मगर मेरे साथ आये
मुझे बताये
कि वो कहा है
जो वादा कर के मुकर गया है
जो मुझ से पहले ही मर गया है

अजाम की तरफ

फराज़े आस्मां पर सुब्ह दम कितना उजाला था
उफक के आईनो मे ताज़ादम सूरज की किरनें मुस्कुराती थी
फिज़ा को गुदगुदाती थी
किरन इक इक किरन मिज़राबे साजे नूर थी गोया
परिन्दे शाखसारो मे चहकते चहचहाते थे
सुहाने गीत गाते थे
भरा था आस्मां नग्माते-जांपरवर की तानो से
परिन्दो की उडानो से

मगर अब दम-ब-दम मज़र उजडता जा रहा है
हो रहा है आस्मा खाली
फिज़ा के आईनो मे जितने रोशन अक्स थे, सब बुझते जाते है
उजालो को थका मारा है दिन भर की मसाफत ने
थकन सूरज के चेहरे पर सियाही मलती जाती है
परिन्दे ख़स्तगी का ज़ख्म खा कर
शाम की अन्धी गुफा मे गिरते जाते हैं
हवा इक मातमी लहजे मे पैगामे-दुरूदे-शब सुनाती है
खमोशी बढती जाती है

अजाम=अन्त फराज़े आस्मां=आकाश की ऊँचाई उफक=क्षितिज मिज़राबे साज़ नूर=प्रकाश वाद्य की मिज़राब शाखसारो=वृक्षों के बाहुल्य का स्थल नग्माते जांपरवर=जीवन शक्ति बढ़ाने वाले गीत दम ब दम=क्षण प्रति क्षण मसाफ्त=यात्रा खस्तगी=थकन पैगामे दुरूदे शब=रात के सलाम का सदेश

शनीदा

सुना है मैं ने
नमूदे-सुब्हे-अजल का मजर बहुत हसी था
नजारा वो कितना दिलनशी था
किरन किरन रोशनी फलक की बुलदियो से उतर रही थी
जमी के जुल्मतकदे को रगीनियो से मामूर कर रही थी

सुना है मैं ने
कि इक जमाना था, खुदनुमाई के शौक मे जब
खुदा ने अपनी तजल्लियो से नकाब उलट दी थी
——— और गुनहगार आदमी ने
फरोगे-खुद आगही से अपने दिलो-नजर जगमगा लिये थे
सजा के हुस्ने-यकी की महफिल, चिरागे-ईमां जला लिये थे

सुना है मै ने
कि मुझ से पहले जो लोग रहते थे इस जमी पर
(इसी कदीम आस्मा के नीचे)
वो मुत्मइन भी थे, शादमा भी
गुजरते लम्हो के राजदा भी
उन्हे खबर थी ———

शनीदा=सुना हुआ नमूदे सुब्ह अजल=पहले सुब्ह के होने फलक=आकाश जुल्मतकदे=अधकार के घर मामूर=भरा हुआ खुदनुमाई=आत्म प्रदर्शन तजल्लियो=बिजलिया फरोगे खुदआगही=आत्म चेतना की शोभा दिलो नजर=दृष्टि और मन हुस्ने यकी=अत्यधिक विश्वास चिराग ईमां=धर्म पर दृढ़ विश्वास रूपी ज्योति कदीम=प्राचीन मुत्मइन=सतुष्ट शादमां=प्रसन्न राजदां=रहस्यों को जानने वाले

कि ज़िन्दगी धूप छाँव का एक सिल्सिला है
अज़ल से फैला हुआ है जो मंजिले-अबद तक
(तो वो अज़ल से भी आश्ना थे, उन्हे अबद से भी आगही थी)

सुना है मैं ने
मगर मुझे आरज़ू रही है
कि ज़िन्दगी का ये दौरे-ज़र्री
कि आदमी का ये अहदे-रफ्ता
मैं अपनी आखो से देख सकता

अज़ल=सृष्टि के प्रारम्भ मंजिले अबद=अंतिम गंतव्य
आश्ना=परिचित अबद=अंत आगही=चेतना
दौरे ज़र्री=सुनहरा युग अहदे रफ्ता=बीता हुआ युग

तिलिस्मे-आबो-गिल

शब की तारीकी में ख्वाबों का सफर
और अजब इक मजरे-सहरआफरी पेशे-नज़र

काले-काले बादलों की सरसराती छांव में
खिलखिलाते, शोख फूलों की महकती क्यारियां
मौजे-खुशबू ए-रवां
मौजे खुशबू ए-रवां के साथ-साथ
एक लहराता पहाड़ी सिल्सिला फैला हुआ
दायरा दर दायरा
नूर की बरसात में भीगी हुई नम चोटियां
मरमरी नम चोटियों के दर्मियां
कुछ अनोखी घाटियां
घाटियों में मुनअकिस

तिलिस्मे आबो गिल=मिट्टी और पानी का रहस्य तारीकी=अंधेरे मजर सहरआफरी=जादू करने वाले दृश्य पेशे नज़र=दृष्टि के सामने शोख=चचल मौजे खुशबू ए रवां=बहती सुगन्ध की लहर दायरा दर दायरा=वृत्त पर वृत्त मरमरी=सफेद मुनअकिस=प्रतिबिंबित

सात रगो की उभरती डूबती रोशन धनक
सीमगूं ढलवान से नीचे उतर कर सब्ज़ झील
झील मे जलता कँवल
साहिली शादाबियो के आस पास
शबनम आलूदा, मुलायम नम घास
घास मे इक शोलादम खूंख्वार साँप
साप की फुकार से इक गूना हलचल दायें-बायें
दूर तक वहशी हवा की साय साय

सीमगू=रजत सब्ज़=हरी शादाबियों=किनारे की हरियाली शबनम आलूदा=ओस से भरी हुई शोलादम=आग जसी सांस वाला

आते जाते लम्हो की सदा

कल मैं बहुत ही अफसुर्दा था
जीने से बेजार हुआ था
मेरी नजर मे ———
ये दुनिया थी
बदसूरत, बीमार सी बुढिया
इस दुनिया को देख के मै ने
कल जो कहा था
वो कल तक का ही किस्सा था

आज मैं खुश हूँ
आज तो सचमुच जीने का अरमान है मुझ को
आज ये दुनिया ———
मेरी नजर मे
नई नवेली सी दुल्हन है
इस दुनिया को देख के
मेरे होटो पर जो हर्फ खिले हैं
आज का अफसाना कहते हैं

अफसुर्दा=खिन्न

कल जाने क्या सोच हो मेरी
कल ये दुनिया ———
सामने मेरे
क्या जाने किस शक्ल मे आये
वक्त का रग वदलता चेहरा ———
अपना कौन सा रूप दिखाये
कल शायद मैं इस दुनिया की नई कहानी
किसी नये उन्वां से सुनाऊँ
अपने कहे को खुद झुटलाऊँ

मैं कि फकत आते जाते लम्हो की सदा हूँ
किस को खबर है कब सच्चा हूँ
कब झूटा हूँ !

उन्वां=शीर्षक

सफर का आखरी मजर

सफर पर चले थे तो सोचा था क्या कुछ ———
कई रास्ते अपने कदमो से हम रौंद देंगे
कई हमसफर हर कदम पर मिलगे
रफाकत का नश्शा
सफर की थकन मे कुछ इस तरह घुलता रहेगा
मसाफत की दूरी को महसूस होने न देगा

सफर पर चले थे तो सोचा था हम ने
कई मेहरबा बस्तिया रास्ते मे पडेगी
जो इस दिल की तन्हाइयो का मदावा करेगी
गुजरते हुए कैफपरवर मराहिल
निशाते-तलब की वो सौगात देंगे
हवाओ के हाथो मे हम हाथ दे कर चलेगे
यूँ ही, नौ-ब-नौ, मुतजिर मजिलो की तरफ पाव उठते रहेगे

रफाकत=मित्रता मसाफत=यात्रा मदावा=उपचार कैफपरवर=आनन्दित करने वाले मराहिल=मोड निशाते तलब=आनन्द की अभिलाषा नौ ब नौ=नये स नया मुतजिर=प्रतीक्षित

सफर पर चले थे तो सोचा था ——— लेकिन
सफर पर चले थे तो सोचा कहा था
ये मज़र इन आखो ने उस वक्त देखा कहा था
न रस्ता कोई लडखडाती नजर मे
न कत्अ-ए-मसाफत का सौदा है सर मे
निशाते-तलब ही की सौगात कोई
न उन खाली हाथो मे है हाथ कोई
थकन से लरजते हुए पाँव वजर जमी मे गडे है
जहा से सफर पर चले थे किसी दिन
वही हम अभी तक अकेले खडे हैं

कत्अ ए मसाफत=यात्रा को कम करना निशाते तलब=आनन्द की अभिलाषा

सफर का आखरी मजर

सफर पर चले थे तो सोचा था क्या कुछ ———
कई रास्ते अपने कदमो से हम रौंद देंगे
कई हमसफर हर कदम पर मिलेंगे
रफाकत का नश्शा
सफर की थकन मे कुछ इस तरह घुलता रहेगा
मसाफत की दूरी को महसूस होने न देगा

सफर पर चले थे तो सोचा था हम ने
कई मेहरबा बस्तियाँ रास्ते मे पडगी
जो इस दिल की तन्हाइयो का मदावा करगी
गुजरते हुए कैफपरवर मराहिल
निशाते-तलब की वो सौगात देंगे
हवाओ के हाथो मे हम हाथ दे कर चलेंगे
यूँ ही, नो-ब-नो, मुतजिर मजिला की तरफ पाव उठते रहेंगे

रफाकत=मित्रता मसाफत=यात्रा मदावा=उपचार कैफपरवर=आनन्दित करने वाले मराहिल=मोड निशाते तलब=आनन्द की अभिलाषा नो व नो=नये से नया मुतजिर=प्रतीक्षित

सफर पर चले थे तो सोचा था ——— लेकिन
सफर पर चले थे तो सोचा कहाँ था
ये मजर इन आखो ने उस वक्त देखा कहाँ था
न रस्ता कोई लडखडाती नजर मे
न कत्अ-ए-मसाफत का सौदा है सर मे
निशाते-तलब ही की सौगात कोई
न उन खाली हाथो मे है हाथ कोई
थकन से लरजते हुए पाँव बजर जमी मे गडे है
जहा से सफर पर चले थे किसी दिन
वही हम अभी तक अकेले खडे हैं

कत्अ ए मसाफत=यात्रा को कम करना निशाते तलब=आनन्द की अभिलाषा

एक अच्छा शहरी

सुब्ह को जब वो घर से निकला
लाड से बीवी दरवाजे तक छोडने आई
छोटे-छोटे कदम उठाता
नीची नज़र से
बस स्टाप की सम्त बढा वो

दाये बाये मंजर क्या है
तेज हवा क्यूँ चलती है, मौसम कैसा है
आगे आगे चलने वाला अनजाना साया किस का है
इन बातों की तरफ कब उस का ध्यान गया है
अपनी परछाईं की हद से आगे कब उस ने देखा है
इन बातो पर ध्यान वो क्यू दे
क्यूँ इन मे वो दिलचस्पी ले
मुफ्त पराग दा खातिर हो ? और तो इन मे क्या रक्खा है ?।

उस का ध्यान तो मतलूबा नम्बर की बस के पहियो की रफ्तार मे गुम है
जो तेजी से उस के दफ्तर के रस्ते पर दौड रही है
चौराहे और मन्दिर मस्जिद
सब को पीछे छोड रही है
उस की दिलचस्पी का मरकज तो वो ऊँची सी कुर्सी है

सम्त=तरफ खातिर=उद्विग्न मतलूबा=अपेक्षित मरकज=केन्द्र

जिस के आगे लोहे की इक मेज़ रखी है
मेज़ प' बिखरे फाइल ही उस की दुनिया है
आज और कल हैं
अपने हालो-मुस्तकबिल के सारे खाके उस ने उन मे देख लिये है
मेज़ प' जितने फाइल होगे
वो उतनी ही दिलचस्पी से दफ्तर मे मौजूद रहेगा
हर फाइल को बारी बारी
सधे हुए हाथो की तराज़ू मे तौलेगा
मेज के इक कोने से उठा कर दूसरे कोने पर रख देगा
सारे दिन 'मसरूफ' रहेगा

अफसर की खुशनूदी का परवाना ले कर
शाम को सीधा घर आयेगा
दरवाजे पर बीवी इस्तकबाल करेगी
मुस्तकबिल के रोशन ख्वाबो मे कुछ ताजा रग भरेगी
बस स्टाप प' भीड बहुत थी
चौराहे पर शायद एक्सीडेन्ट हुआ था
बीच सडक पर एक विदेसी कार खडी थी
पास ही उस के, खून मे डूबी लाश पडी थी
सब दुकानें बद थी, शायद शहर मे फिर हडताल हुई थी
अनपढ हॉकर अखबारो को नचा नचा कर चिल्लाते थे
'आज की ताजा खबरें' कह कर बासी खबरे दोहराते थे
तीस मरे, सत्तर जख्मी हैं
भूका, नगा, बेघर रेवड पार्लीमेन्ट प' टूट पडा था
(सरकारी एलान की रू से एक मरा है, दो जख्मी है)
सठ धनी धनवान की सब से छोटी बेटी
अपने घर के नौकर के साथ आज सवेरे भाग गई है

हालो मुस्तकबिल=वर्तमान और भविष्य मसरूफ=व्यस्त खुशनूदी=प्रसन्नता इस्तकबाल=स्वागत मुस्तकबिल=भविष्य रू=हिसाब विचार

समुन्दर का नोहा सुनो !

समुन्दर का नोहा सुनो —— और सोचो
समुन्दर को यू किस ने नाला-व-लव कर दिया है
समुन्दर के पुरशोर सगीत मे किस ने गम भर दिया है
खरोशॉ समुन्दर की मौजा को क्या दुख है,
ये किसलिये इस अलमनाक अदाज मे चीखती है
सिसकती सी आवाज मे चीखती ह

समु दर का नोहा सुनो —— और सोचा
समु दर का पानी लहू रग क्यू है
समुन्दर का सीना
चमकती हुई खुशनुमा सीपियो, वेवहा मोतियो का खजीना
समु दर के सीने प' किस ने ये खनी सफीने उतारे
समुन्दर की दौलत
समुन्दर की गहराइया से निकाली
किनारे प' डाली
लुटेरे जहा सफ व-सफ हाथ अपने पसारे खडे थे
समु दर की शहरग मे जिन की हवसनाक नज़रो के खजर गडे है

नोहा=विलाप नाला व लव=यातना पर वाध्य अलमनाक=दर्दीले वेवहा=अमूल्य खजीना=भण्डार सफीने=नावें सफ व सफ=पक्तिबद्ध शहरग=जीवन नाडी हवसनाक=लोलुप

समुन्दर का नोहा सुनो —— और साचो
समुन्दर की शहरग मे वहता लहू कतरा-कतरा
नही ——
कतरा कतरा नही, शोला शोला
समुन्दर मे फला
किनारो की जानिव वढा आग और खू का रेला
तो किस से रुकेगा
कोई है जो तूफाँ के वढते क़दम रोक लेगा ? ।

समुन्दर का नोहा सुनो —— और सोचो
ये फूलो भरी वस्तिया ——
जो तुम्हारे लिये नग्माज़ारे-इरम ह
ये आतिश-व-जाँ नोहा वर लव समुन्दर की सय्याल सरहद से
अव के' कदम ह ।

जानिव=ओर नग्माज़ारे इरम=स्वग का सगीत उत्पन्न करने वाला आतिश व जाँ=आत्मा म आग लिये नोहा वर लव=होटो पर विलाप सय्याल=द्रव क=कितने

मेरा नाम

मेरा नाम सुल्तान मुहम्मद खाँ है
मैं बेटा हूँ
मौलाना अहमद खाँ का
जो पंजवक्ता नमाज़ी थे
लेकिन मैं फ़ज्र की नमाज़ के वक्त
सोया हुआ पाया जाता हूँ
ज़ुहर और अस्र की नमाज़ो मे
दफ्तरी मसरुफियत ———
मेरा पीछा नही छोडती
मगरिब और इशा की नमाज़े
मुझ पर लानत भेजती हैं
कि ये वक्त मेरी शराबनोशी का है
इस के बावजूद मुझे
अपने नाम पर भी इस्रार है
और अपनी वलदीयत पर भी

पंजवक़्ता नमाज़ी=पांचो वक़्त की नमाज़ पढ़ने वाले   फ़ज्र=प्रात काल
ज़ुहर=दोपहर की नमाज़   अस्र=सूर्यास्त से पहले की नमाज़
मसरुफियत=कार्यालय संबंधी व्यस्तता   मग़रिब=सायंकाल की नमाज़
इशा=रात की नमाज़   इस्रार=ज़िद हठ   वलदीयत=बाप का नाम आदि

गुमशुदा कड़ियाँ

बहुत दिनो का किस्सा है ये
बचपन के आकाश के नीचे
भरे पूरे घर के आँगन में
हमजोली लम्हा से जब म
आख मिचौली खेल रहा था
वक्त अचानक कोई शरारत कर जाता था
घर की कोई चीज किसी दिन
देखते देखते खो जाती थी
आख से ओझल हो कर जसे रूह मे शामिल हो जाती थी

आज वो सब चीजे मेरा बर्बादशुदा माज़ी हैं, में हूँ
जिस ने ये चीज़ नही देखी
मेरे माज़ी को नही जाना
मुझ को क्या पहचान सकेगा
म क्या हूँ ? क्या जान सकेगा ? ।

बर्बादशुदा माज़ी=विध्वस्त अतीत

खिजाँ का मौसम

खिजाँ का मौसम है,
पेड बेबर्गो-बार शाखा का इक हयूला हैं
इक ठिठरता हुआ हयूला
कि पत्ता पत्ता
हवा के यखबस्ता सद झोको की मार खा कर
तमाम सरताबियाँ भुला कर
हवा के कदमो मे जा गिरा है
ये खुश्क पत्तो के ढेर, शादाबी-ए-गुजिश्ता की यादगार
बरहना पेडो की खुशलिबासी के मुस्कराते दिनो की पामाले-गम बहारे
हवा उठा कर उन्हे कही फेंक आयेगी
पेड चुप रहेगे
हवा से कुछ भी न कह सकेंगे
कि बेजबाँ हैं
तिलिस्मे-फितरत के राज़दाँ है
मगर परिन्दो की खानाबर्बाद टोलिया शोर कर रही है
वो नाशनासे-तिलिस्मे-फितरत

खिजाँ=पतझड बेबर्गो बार=बिना फल-फूल हयूला=आकृति का आभास यखबस्ता=बर्फ कर देने वाले सरताबियाँ=उद्दण्डताए शादाबी ए गुजिश्ता=बीतीहुई प्रफुल्लता बरहना=नगे खुशलिबासी=सुन्दर परिधान पामाले गम=दुखो की रौंदी हुई तिलिस्मे फितरत=प्रकृति के रहस्य राजदाँ=रहस्य जानने वाले खानाबर्बाद=जिनके घर नष्ट हो गये हैं नाशनासे तिलिस्मे फितरत=प्रकृति के रहस्य से अपरिचित

वसेरे जिन के उजड गये है
सव अपने अपने घरो से शायद विछुड गये हैं
घरो की पहचान सब्ज़ पत्तो के सायवानो से थी,
जो वर्वाद हो के मिट्टी मे मिल चुके हैं
निगाह, घवरा के वेकरारी के साथ
वीरानियो मे चारो तरफ घुमाई
हरे-भरे गुमशुदा घरो की कोई निशानी न देख पाये
निगाह की आखिरी हदो तक ———
फिज़ा खण्डर है
तमाम मज़र
उजाड मौसम की जाविदानी का नक्शगर है

सायवानो=छाया करने वालो जाविदानी=अमरता नक्शगर=वेलवूटे बनाने वाला

रास्ते रोशन

नया सूरज ज़मी पर रोशनी फैला रहा है,
——————— दूर तक है रास्ते रोशन
हज़ारो ज़रफ़िशा किरने
सफ़र मे है चमकती तितलिया बन कर
घने जगल, खुले मैदान, बल खाती हुई नदियाँ,
कि झुरमुट कोहसारो के
मुसाफ़िर रोशनी की आखिरी मज़िल नही कोई

नया सूरज
ज़मी पर रोशनी फैला रहा है,
——————— दूर तक हैं रास्ते रोशन
हज़ारो ज़रफ़िशाँ किरने

ज़रफ़िशाँ=स्वर्ण बिखेरती किरणें   कोहसारों=पहाड़ों

सफर मे है ——— चमकती तितलियाँ वन कर
हवा के दोशे-रगी पर
फिज़ाये नूरो-निकहत का है गहवारा ———
फसू परवर ये नज्ज़ारा
निकल कर अपने मामूलात की अधी गुफाओ से
चले हम भी चमकती तितलिया की हमरकावो म
उसी सदियो पुरान शहर की जानिव
जहा सदिया पुराने गोश-ए-जुल्मत म,
——— इक तख्ता गुलावो का
गुजरते वक्त की नैरगियो पर दम-व-खुद हैरा
मुसाफिर रोशनी की वापसी का मुतजिर होगा

दोशे रगी=रगीन कधे नूरो निकहत=प्रकाश और सुगध गहवारा=हिंडोला फसू परवर=जादू को वढाने वाली नज्जारा=दृश्य मामूलात=नित्य कर्मों हमरकावी=सहयात्रा जानिब=तरफ गोश ए जुल्मत=अधेरे कोने नैरगियो=विविधताओ दम व खुद=मौन मुतज़िर=प्रतीक्षित

खाक-ओ-वाद से आगे

तुझे जो देखा
तो दिल मे कैसी उमग जागी !

किसी सुहाने सफर प' निकले
नयी-नयी वादियो से गुजरे
हरे भरे जँगलो मे घूमे
जवाँ नदी के कुशादा सीने प' होट रख द
सजल पहाडो की सुमई चोटिया को छू ले
हवा के झूले मे खूब झूले

नयी नयी वादिया के हैरानकुन सफर मे
हरे भरे जँगलो की पुरपच रहगुजर मे
सुगध धरती की खाक की राहबर हो, गुमराहियो का डर हो
कही मिल शवनमी ढलाने, कही चटानो से सख्त टीले
कही दरकती जमी से उठते धुएँ के वादल हो नीले-नीले

कही परिन्दा की फडफडाहट
किसी अँधेरी गुफा की खामोशियो प' यलगार कर रही हो
कही पुरअसरार घाटियो मे छुपे दरिन्दे झगड रहे हो

खाक ओ बाद=मिट्टी और हवा कुशादा=चौडे हैरानकुन=
अचभित करने वाले पुरपेच=घुमावदार राहबर=पथ
प्रदर्शक यल्गार=आक्रमण पुरअसरार=रहस्य से भरपूर

शऊर का काफिला, धुधलका की रहगुज़र से
गुज़रता जाय
वदन की हदवन्दिया का अहसास मरता जाये
घुटा-घुटा सा वजूद, इन्ही मज़रा के ऊपर बिखरता जाये

तुझे जो देखा
तो दिल के ठडे लहू मे कितने उबाल आये
न जाने क्या-क्या खयाल आये ।।

शऊर=विवेक रहगुज़र=रास्ता हदबंदियों=सीमा निर्धारण निशान वजूद=अस्तित्व मज़रो=दृश्यों

लहू मे डूबता मजर

ये कसे रोजो-शब है जो लहू मे तरते आये
गुजरते वक्त की पहचान इक मौजे-लहू ठहरी !

लहू मे तर-ब-तर हर लम्ह-ए-मौजूद का चेहरा
हमारी बस्तियो की शहरगे ये काट दी किसने ?
बदन मे दौडता जिन्दा लहू सडको प' बह निकला
नदी बन कर बहा सडको से मैदानो तक आ पहुँचा
लहू ताजा लहू ———
मौसम ब मौसम बहता जाता है
हरी फस्लें लहू के आतिशी सैलाब मे डूबी
जमी की कोख खूने-गम के लावे मे जलती है
लहू की बू, सुलगती बू हवा के साथ चलती है

मजर=दृश्य रोजो शब=दिन और रात मौजे लहू=लहू की लहर
तर ब तर=समूचा भीगा हुआ लम्ह ए मौजूद=उपस्थित पल
शहरगें=जीवन शक्ति देने वाली रक्त की नसो सैलाब=बाढ

सुलगते खून की बू पर दरिन्दे शोर करते है
फिजा मे जब कोई ताइर कही पर फडफडाता है
तो जलते बाज़ूओ से खून के कतरे टपकते है
(धुआ गहरा न हो तो हम ये मजर देख सकते है)

धुऐं की फैलती चादर
लहू मे डूबता मजर
अजल की तीरगी ने छीन ली आँखो की बीनाई
नजर से जिन्दगी के आखिरी आसार भी गुम है
ये कोई मोजिजा होगा, अभी जिन्दा जो हम-तुम है

ताइर=पक्षी पर=पख अजल=मौत तीरगी=अधेरा
बीनाई=आखो की ज्योति आसार=चिह्न मोजिजा=चमत्कार

अंधी गुफा मे मौत

फजा मे किसी गम की झंकार मंडला रही है
हवा के लबो पर ——
कोई मातमी धुन है जो अज उफक ता उफक गूंजती है
मगर आस्माँ दम-ब-खुद है
जमी अपने महवर प' ठहरी हुई सोचती है कि क्या खो गया है
कहा कुछ न कुछ सान्हा हो गया है

मैं इक सद अंधी गुफा के दहाने प' गुमसुम खडा हूँ
बहुत जोर से चीखना चाहता हूँ
भयानक उदासी का सगी फसूं तोडना चाहता हूँ
बहुत ज़ोर से चीखना चाहता हूँ
मगर मेरी आवाज मुझ से बिछड कर कही खो गई है
मिरे सारे जज्बे, सभी ख्वाहिशे बेजबा हो गई है
हर अहसास खामाशियो की सियाही मे मुह को लपेटे पडा है
कोई लफ्ज़ अब मेरे दुख का मदावा नही है
कोई लफ्ज़ मेरा मसीहा नही है
मुझे ऐसा लगता है जैसे नफस दो नफस मे
हर अहसासो-इद्राक का साथ मैं छोड दूगा
इस अंधी गुफा मे कही गिर के चुपचाप दम तोड दूगा

उफक ता उफक=क्षितिज से क्षितिज तक दम ब खुद=मौन महवर=धुरी
सान्हा=दुघटना दहान=द्वार फसू=जादू जज्बे=भाव मदावा=उपचार
नफस दो नफस=एक दो सास अहसासो इद्राक=सवेदना और विवेक

नवेद

बदलते मौसम का अवल्ली खुशनवा मुगन्नी
ये नन्हा-मुन्ना-सा इक परिन्दा
जो इक पुराने दरख्त के नोदमीदा पत्तो की चिलमना मे
छुपा हुआ चहचहा रहा है
हवा के बरवत प' जश्ने-नौ रोज का तराना सुना रहा है
नवा-ए-रगी के ज़ेरो-बम से
फज़ा के खामोश, सद सीने मे एक हलचल मचा रहा है
नई तमाज़त से मेहरबा आफताब को हुमकता पा कर
ठिठरती बेबग डालियो मे करीन-ए बर्गो-बार पा कर
शगुफ्ता लम्हो की तितलियो को चमन मे वापस बुला रहा है

नवद=शुभ सूचना अवल्ली=पहला खुशनवा=मधुर मुगन्नी=गायक नोदमीदा=नये उगे हुए बरबत=एक वाद्य जश्ने नौ रोज़=नव वर्ष का उत्सव नवा ए रगी=आकर्षक आवाज़ ज़ेरो बम=आरोह अवरोह तमाज़त=गर्मी आफताब=सूर्य बेबग=बिना पत्तावाली करीन ए बर्गो बार=फूल पत्तो की सभावनाए शगुफ्ता=प्रफुल्लित लम्हो=क्षणो

तरब की धुन मे
ये सरमदी गीत गा रहा है
——— कि रगो-निकहत के आवशारो
गुलो-समन के हसी नजारो
खिज़ा के डर से चमन से निकली हुई वहारो
अदम की यखवस्ता वादियो मे फिरोगी खानावदोश कव तक
रहोगी यूँ वफपोश कव तक
नमू की दुनिया लिये नज़र मे
पलट के आ जाओ अपने घर मे
खिज़ाँ का अफ़ीत मर चुका है
तुम्हारी खानावदोशियो का उजाड मौसम गुज़र चुका है

तरब=आनन्द सरमदी=जिस का क्षय न हो रगो निकहत=रग और सुगध आवशारो=झरनो गुलो समन=फूलो के नाम खिज़ाँ=पतझड अदम=मृत्यु यखवस्ता=बर्फीली बफपोश=बर्फ़ पहने हुए नमू=विकास अफ़ीत=दानव

बुलावा

जरा ठहरो ! किधर हम जा रहे है
उधर, उस चार दीवारी के पीछे
वो बूढा गोरकन चिल्ला रहा है

"इधर आओ ! कदम जल्दी बढाओ
यहाँ इस चारदीवारी के अन्दर
जनम दिन से तुम्हारी मुतजिर है
वो कब्रें, जिन की पेशानी प' अब तक
किसी के नाम का कत्बा नही है

गोरकन=कब्र खोदने वाला मुतजिर=प्रतीक्षित पेशानी=ललाट
कत्बा=समाधि पर लगा पत्थर जिस पर मृतक का विवरण होता है

ज़मी का ये टुकड़ा

ज़मी का ये टुकड़ा
मिरे बढते क़दमो को चारो दिशाओ से अपनी तरफ खीचता है
गले से लगा कर मुझे भीचता है
कि बारह बरस से यहाँ दफन हूँ मैं

ज़मी का ये टुकड़ा
मिरे दीदा-ओ-दिल की मजिल, मिरी ज़िन्दगी है
कि ज़र्रों मे उस के अजब दिलकशी है
मगर मैं तो उस से गुरेज़ाँ रहा हूँ
गुरेज़ाँ हूँ अब भी
कि उस तौद-ए-खाक के रूबरू मैं
पशेमा था कल भी, पशेमाँ हूँ अब भी
पशेमानिया मेरे शामो-सहर का मुकद्दर
पशेमानियो से मिरे रोज़ो-शब की फिज़ाये मुकद्दर

ज़मी का ये टुकड़ा
दिखाता है मुझ को मिरी बेबसी का वो आईना जिस मे
अभी तक वो इक साअते-मुफइल मुनअकिस है
कि जब वो मुझे या उसे कत्ल करने को ले जा रहे थे
वही जो यहा खाक की चादर ओढे हुए चुप पडा है
जो मेरा ही इक पैकरे-खूंशुदा है

दीदा ओ दिल=दृष्टि और भावना   गुरेज़ाँ=पलायन करने वाला
तौदे ए खाक=रेत के छोटे बड़े [illegible] आकार   पशेमाँ=लज्जित   शामो सहर=सुबह और शाम   रोज़ो शब=दिन और रात   फ़िज़ाये मुकद्दर=मलिन वातावरण   साअते मुफइल=[illegible] पल   मुनअकिस=प्रतिबिंबित   पैकरे खूं शुदा=रक्तरंजित आकृति [illegible]

तो अब वो उसे या मुझे कत्ल करने को ले जा रहे थे
तो बेदस्तो-पा इक तमाशाई की तरह मैं उन का मुंह तक रहा था
समझ मे न आये अगर अब मैं सोचू मुझे क्या हुआ था
मिरी बेबसी थी किसी लम्ह-ए-बेबसीरत की साज़िश
कि उस मे कोई मस्लहत उस को थी
दीदो दानिश मे कद जिस का सब से बडा है
जो हर अहदे-आईन्दा-ओ-रफ्ता के इल्मो-इल्लत की हद है
अज़ल है, अबद है

ज़मी का ये टुकडा
जहा आ के मैं खुद को बूढा सा महसूस करने लगा हू
खुद अन्दर ही अन्दर बिखरने लगा हूं
मिरी हर तगो-दौ का हासिल है, हद है
अज़ल है, अबद है

(मज़ारे असलम पर)

बेदस्तो पा=बिना हाथ पांव का लम्ह ए बेबसीरत=विवश हुए पल
मस्लहत=अपने हितों का ध्यान दीदो दानिश=आंख और बुद्धि
अहदे आईन्दा ओ रफ्ता=भूत और भविष्य का युग इल्मो-इल्लत=ज्ञान के कारण अज़ल=आदि अबद=अन्त तगो दौ=भागदौड़